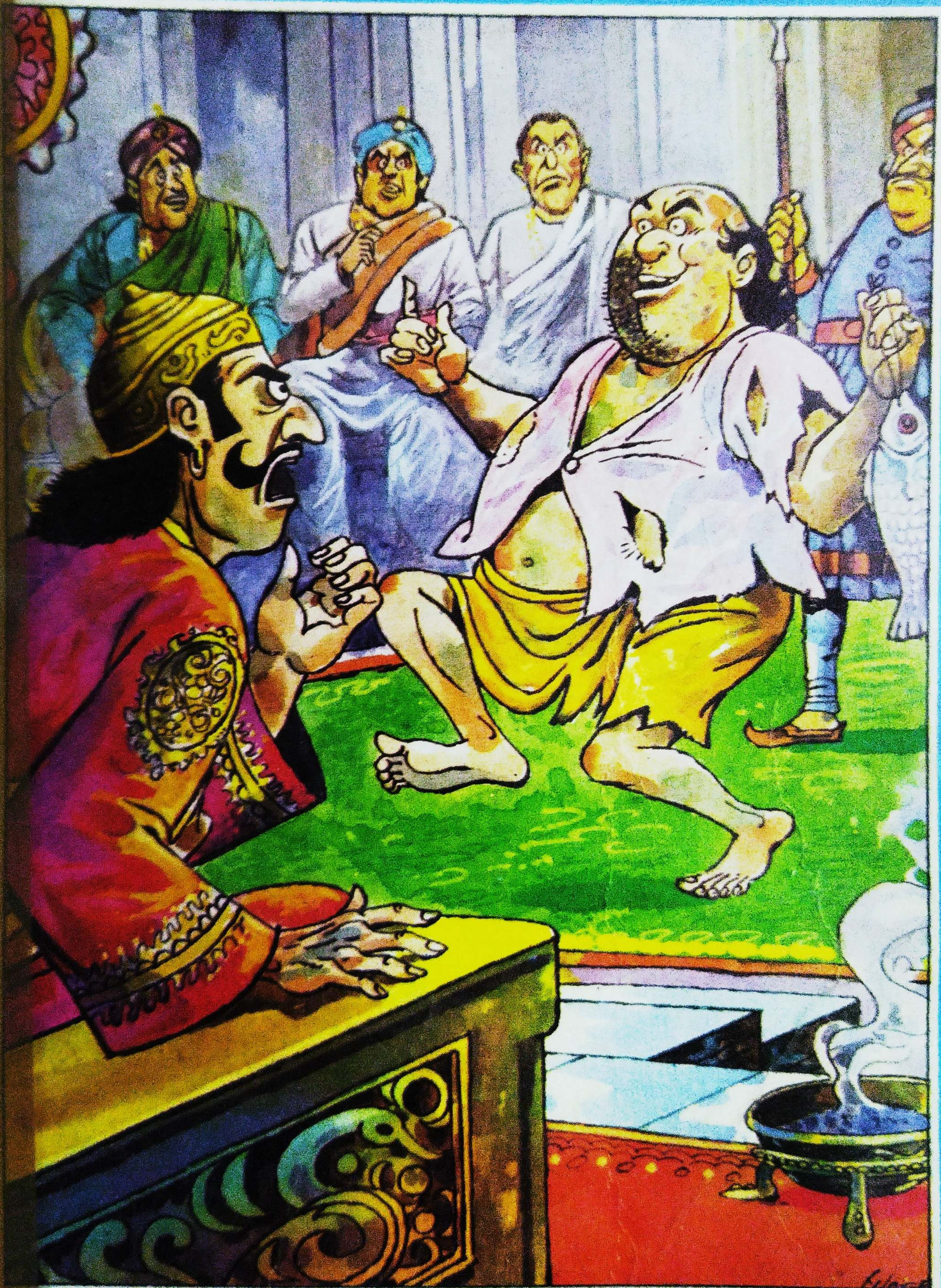
डायमण्ड कॉमिक्स प्रस्तुति

मसखरा गोपाल

कृष्णनगर का चतुर नाई



अमर चित्रकथा द्वारा भारतीय संस्कृति से परिचय बढ़ायें

डायमण्ड कॉमिक्स

अमर चित्रकथा अब डायमण्ड कामिक्स में

Very Good Story

मसखरा गोपाल

कृष्णनगर का चतुर नाई

चतुर नाई, गोपाल भाँड़, बंगाल का बीरबल कहलाता था। किसी भी तरह की परिस्थिति को अपने अनुकूल ढाल लेने में उसकी अक्ल का जवाब नहीं था। मुर्शिदाबाद के नवाब के अधीन एक राजा थे– कृष्णनगर के राजा कृष्णचंद्र गोपाल उनका बड़ा स्नेहपात्र था। जब कभी सनकी नवाब राजा कृष्णचंद्र को किसी अटपटी और उलझन भरी स्थिति में डाल देता तो, गोपाल भाँड़ हमेशा राजा को उबार लेता।

राजा का इतना स्नेहपात्र होते हुए भी, गोपाल जरा भी घमंडी नहीं था। वह आम लोगों से बराबर मिलता जुलता, और उनकी मदद करता रहता था। यही कारण है कि आज तक उसकी लोकप्रियता बनी हुई है।

Editor: **Anant Pai**

Published by

Diamond Comics (P) Ltd., 257, Dariba Kalan, Delhi-110006


गोपालने धरती नापी
बंगाल में कृष्णनगर के राजा, कृष्णचंद्र के दरबार में, चतुर नाई गोपाल का बेरोक-टोक आना-जाना था। लेकिन एक दिन-
महाराज तुमसे नहीं मिलेंगे।
तब तो मैं महाराज से जरूर मिलूंगा।
मैं आ गया, महाराज।
परेशान मत करो, गोपाल। मैं बहुत चिंतित हूं।
राजा कभी चिंता नहीं करते, महाराज। इस काम के लिए उनके चाकर होते हैं।


चिंता न करें, महाराज! मेरे मित्र की तरह, बस माँ काली की प्रार्थना करें। आज सुबह मैं उसके घर गया तब वह पेट के दर्द से छटपटा रहा था।
तुम्हें क्या तकलीफ है?
मेरा पेट! सब कुछ आजमा लिया पर... ओह! ओह!
माँ काली से विनती करना आजमाया?
नहीं! वह तो नहीं किया।
माँ काली! मुझे अच्छा कर दो। तुम्हें ए... एक... भैंसा चढ़ाऊँगा।
गोपाल, दर्द तो काफी ठीक हो गया!
वाह! अब फटाफट वह भैंसा खरीद लाओ।
भैंसा? काली के लिए? क्यों मजाक करते हो?



वे उसका क्या करेंगी? इसके अलावा मेरे पास पैसे कहाँ हैं? चलो एक बकरा चढ़ा देंगे।
ठीक है, अगर माँ काली की कृपा हो जाये।
गोपाल, दर्द तो छूमंतर हो गया!
यानी माँ काली को बकरा भी मंजूर है।
बकरा? कैसा बकरा? ओहो, बकरा! हुँ..S..S।
फिर वह काली से बोला-
माँ काली, तुम्हें थोड़ी मेह-नत करनी चाहिए। अपने लिए एक चिड़िया पकड़ कर, खा लो न!
हे भगवान! गोपाल... दर्द...पहले से भी भयंकर...
कंजूस कहीं के! माँ से क्षमा माँग।


ऊ ऽ आऽऽ माँ काली, मैं तो मजाक कर रहा था। तुम ठिठोली भी नहीं समझतीं?
बेशक, तुम्हें तुम्हारा भैंसा मिलेगा, एक नहीं पाँच भैंसे! जो चाहोगी दूँगा, पर इस दर्द से छुटकारा दिला दो।
ही! ही! देखी माँ काली की चतुराई?
महाराज मुस्कुराए तक नहीं! वास्तव में चिंतित लगते हैं।
महाराज! महाराज!
उँह! क्या है?
तुम हो! तुमसे मैंने कहा था न, कि परेशान मत करो!
मुझे बताइए न! शायद मैं आपके किसी काम आ सकूँ, महाराज!


ठीक है, बताता हूँ।
मुर्शिदाबाद के नवाब ने हुक्म दिया है कि मैं किसी से सारी धरती की लम्बाई, चौड़ाई की नाप कर-वाऊँ।
बस, इतना ही?
बस का क्या मतलब? ऐसा असंभव काम करने वाला मुझे मिलेगा कहाँ?
यहाँ, महाराज। यह काम मैं कर दूँगा।
तुम मुझे सताना छोड़ोगे कि नहीं, गोपाल!
यह मजाक की बात नहीं है। मेरी तो जान पर आ बनी है।
जानता हूँ, महाराज! तभी तो कह रहा हूँ, मैं कर दूँगा।


न कर सके तो क्या होगा, पता है? मुझे फाँसी हो जायेगी, और तुम बेसहारा हो जाओगे।
ऐसा कुछ नहीं होगा, महाराज!
मेरा भरोसा रखिए। मुझे केवल पच्चीस बैलगाड़ियाँ दिलवा दीजिए।
बैलगाड़ियाँ?
हाँ। और शहर भर का सारा सूती और रेशमी धागा।
फिर कुछ दिन बाद गोपाल बैलगाड़ियाँ ले कर मुर्शिदाबाद के लिए रवाना हुआ।
वह मुर्शिदाबाद में नवाब के महल में पहुँचा तो—
तुम लोग यहीं ठहरो, मैं नवाब से मिल कर आता हूँ।
क्या कहा? कृष्णाचंद्र के पास से आये हो?
जी हाँ, हुजूर।


नाप कहाँ है ?
एक पल को बाहर तशरीफ ले चलें। नाप सेवा में हाजिर है।
गोपाल नवाब को बैलगाड़ियों तक ले गया।
पहली चौदह गाड़ियों का सारा सूत...
...धरती की लम्बाई की नाप के बराबर है - बाकी की ग्यारह गाड़ियों में धरती की चौड़ाई का नाप है।
ले...लेकिन यदि यह सही नहीं साबित हुआ, तो?
आप जाँच करवा लें। बेहतर हो कि हुजूर खुद ही जाँच कर के देख लें।

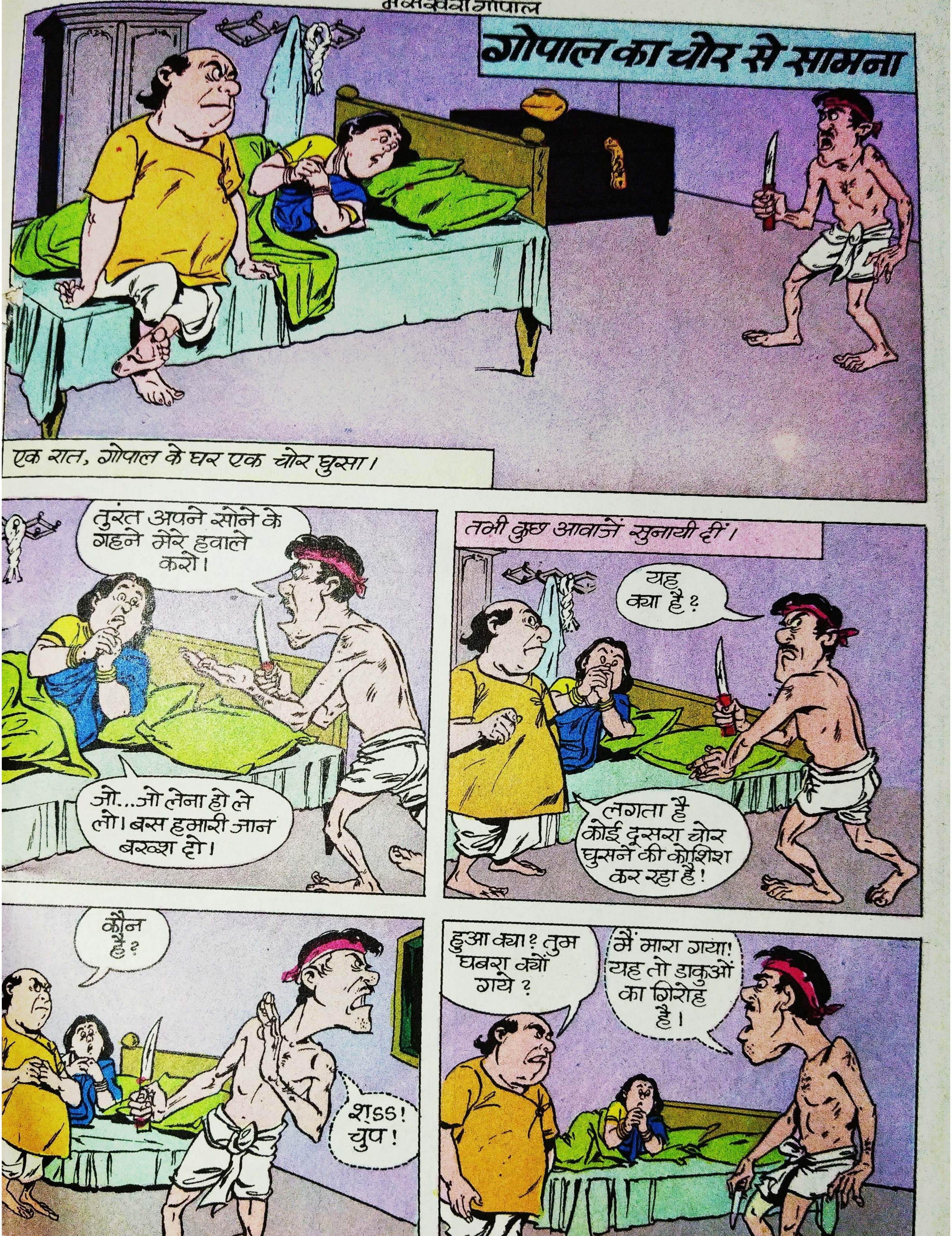

मैं...मैं...उफ...ओह...अच्छा ठीक है! तुम जा सकते हो।
लेकिन, हुजूर, मैंने भी इतनी मेहनत की उसके लिए कुछ इनाम नहीं बख्शेंगे मुझे?
तुम खड़े-खड़े क्या कर रहे हो? इसे सौ मोहरें दे दो!
अभी लाया, सरकार।
बाद में कृष्णनगर में-
हा! हा! हा! तुमने तो कमाल कर दिया, गोपाल। काश मैं उस समय नवाब का चेहरा देख पाता।
अरे, वहाँ देखने को धरा ही क्या था, महाराज!


मिठाई की दुकान में गोपाल
शहर के बच्चे, गोपाल को बड़ा प्यार करते थे, क्योंकि अक्सर वह उनकी शरारतों में शामिल हो जाया करता था। गर्मियों की एक दोपहर में—
हमारा एक काम करेंगे?
मुझे भरोसा है, ये जरूर करेंगे!
भोला की दुकान से हमें मुफ्त मिठाई खिला सकेंगे?
उस कंजूस से मुफ्त मिठाई! असंभव!
दाम देने पर भी वह हमें ठगता रहता है।
ऐसा? तो यह काम मुझ पर छोड़ दो। और मिठाई की दावत के लिए तैयार रहो।
भोला की दोपहर की नींद का यही समय होना चाहिए।


वाकई, ऐसा ही था।
ऐ, मैं ज़रा सो लूँ। कोई आये तो उठा देना, और खबरदार मिठाई चुरा कर खाना मत।
जी, पिताजी।
कौन हो तुम? यह क्या करते हो। बंद करो।
घबराओ मत, मैं तुम्हारे पिताजी की जान-पहचान का हूँ। बेशक उन्हें जा कर बता दो।
पर तुम हो कौन?
मेरा नाम मक्खी है।


पिता जी, जल्दी उठिए, मक्खी है।
उँह? क्या? मक्खी? बकबक बंद कर, मुझे सोने दे।
लेकिन, पिता जी, उसने मिठाई खानी शुरू कर दी है!
अक्ल से काम ले! मक्खी का कितना-सा खाना होता है! फिर जगायेगा तो बुरी तरह पिटाई करूँगा।
मैंने कहा था न, तुम्हारे पिता जी मना नहीं करेंगे।
बाद में–
ये लो, बच्चो! मिठाई उड़ाओ, और जब दुबारा इस गली में से गुजरना तो भोला को धन्यवाद देना मत भूलना। मक्खी का नमस्कार भी कहना।


मालिक कौन है?
एक दिन, गोपाल एक दुकान में जा ही रहा था कि पीछे से दुकानवाला आया।
ऐ, गोपाल! अपने कुत्ते को मेरी दुकान में जाने से रोको।
मेरा कुत्ता?
भाई, यह मेरा कुत्ता नहीं है।
तुम्हारा नहीं है? वह तुम्हारा ही है। तुम्हीं इसके मालिक हो।
बोलो, यह तुम्हारे पीछे आ रहा था या नहीं?
यह बात है। तब तो, मेरा कुत्ता तुम्हारा मालिक हुआ। क्योंकि तुम उसके पीछे आ रहे थे।
अब अगर अपने मालिक को बाहर निकालना चाहते हो, तो, भई, यह काम तुम खुद करो।


गोपाल का चोर से सामना
एक रात, गोपाल के घर एक चोर घुसा।
तुरंत अपने सोने के गहने मेरे हवाले करो।
जो...जो लेना हो ले लो। बस हमारी जान बख्श दो।
तभी कुछ आवाजें सुनायी दीं।
यह क्या है?
लगता है कोई दूसरा चोर घुसने की कोशिश कर रहा है!
कौन है?
श्ऽऽ! चुप!
हुआ क्या? तुम घबरा क्यों गये?
मैं मारा गया! यह तो डाकुओं का गिरोह है।


वे आते ही होंगे। मुझे मार डालेंगे। दया कर के मुझे बचा लो।
हमारा क्या होगा?
शांत रहो, प्रिये! ईश्वर हमारी रक्षा कर रहा है।
ठीक है! घबराओ मत। उनके आने तक हम तुम्हें छुपा लेंगे।
भगवान आपका भला करे।
नीचे छुप जाओ, साँस की आवाज़ भी न आने पाये। हम तुम्हें बचा लेंगे।
जल्दी मेरे साथ आओ!
मैं मदद लेने जा रहा हूँ। ध्यान से सुनो, जैसा कहूँ, वही करना।

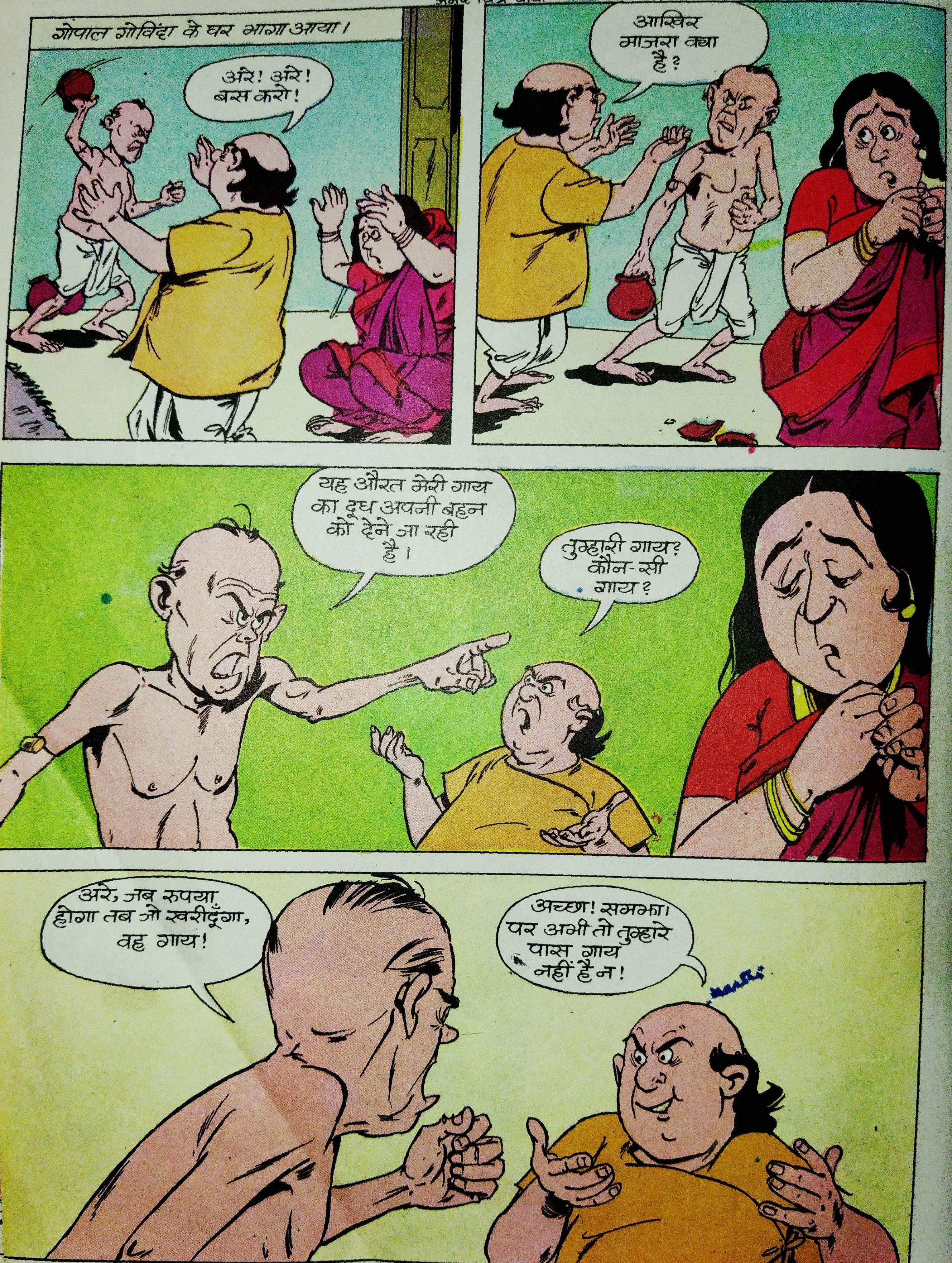

गोपाल सामने के दरवाजे से बाहर निकला।
जल्दी आना।
हाँ, हाँ। लेकिन जैसा कहा है, वही करना। भूलना मत!
गोपाल की पत्नी ने दरवाजा बंद किया ही था, कि पिछवाड़े से डाकू घुस आये।
इधर आ, औरत! जान प्यारी हो तो अपने गहने हमारे हवाले कर दे।
पर...वे....वे तो ताले में बंद हैं।
चाभियाँ कहाँ हैं?
मेरे...मेरे मालिक के पास!


कहाँ है वह?
वहाँ!
ऐ डरपोक! चाभियाँ निकाल!
लेकिन... लेकिन... मेरे पास चाभियाँ कहाँ?
घर का मालिक और तेरे पास चाभियाँ नहीं! निकाल चुपचाप... वर्ना...
मुझे मत मारो... सच कहता हूँ... मैं घर का मालिक नहीं...


हमें उल्लू बनाता है! निकाल चाभी। तेरी बीवी ने बताया।
मेरी बीवी? मैंने इस औरत को पहले कभी देखा तक नहीं।
क्या! अबे डरपोक! अपनी बीवी अपनी नहीं बताता! हम तुम्हें झूठ बोलने की सजा देंगे।
उसी समय, गोपाल राज सैनिकों के साथ आ पहुँचा।
चल गयी! मेरी चाल चल गयी! पर अब उस बिचारे को बचा लेना चाहिए!
डाकू तो चक्कर में पड़ गये।
लो, डाकुओं का तो इलाज हो गया। अब वह तुम्हारा चोर कहाँ है?
यानी घर का मालिक! जाने दो, उसे माफ कर दो। बिचारे को अपने किये की सजा काफी मिल गयी!


गोपाल और गोविंदा
गोपाल का पड़ोसी, गोविंदा, हमेशा ऊँचे ख्वाब देखता रहता था। वैसी ही उसकी बीवी थी।
सोचता हूँ, जैसे ही कहीं से रुपये मिलें, मैं एक गाय खरीद लूँ।
तब तो हमें जल्दी ही कुछ और बर्तनों की जरूरत पड़ेगी। बेहतर हो मैं खरीद ही लाऊँ।
गोविंदा की बीवी बाजार गयी। लौटी तो–
यह सब क्या है?
दूध, दही, मक्खन, घी के लिए बर्तन हैं। हमारी गाय खूब दूध देगी न!
हे भगवान! पर चार ही तो बर्तन लगेंगे। पाँचवाँ किस लिए?


अरे यह! इसमें तो मैं थोड़ा-सा दूध अपनी बहन के घर ले जाऊँगी।
बहन के घर दूध ले जाओगी?
बिना मुझसे पूछे? यह तुम्हारी हिम्मत!
मैं गाय दुहूँगी, सानी-पानी करूँगी, तो दूध का जो जी में आयेगा वही करूँगी।
नहीं कर सकती। गाय मेरी है। रुपये मेरे लगे...
...मूर्ख औरत! भाड़ में जा तू और तेरे ये बर्तन!


गोपाल गोविंदा के घर भागा आया।
अरे! अरे! बस करो!
आखिर माजरा क्या है?
यह औरत मेरी गाय का दूध अपनी बहन को देने जा रही है।
तुम्हारी गाय? कौन-सी गाय?
अरे, जब रुपया होगा तब जो खरीदूँगा, वह गाय!
अच्छा! समझा! पर अभी तो तुम्हारे पास गाय नहीं है न!

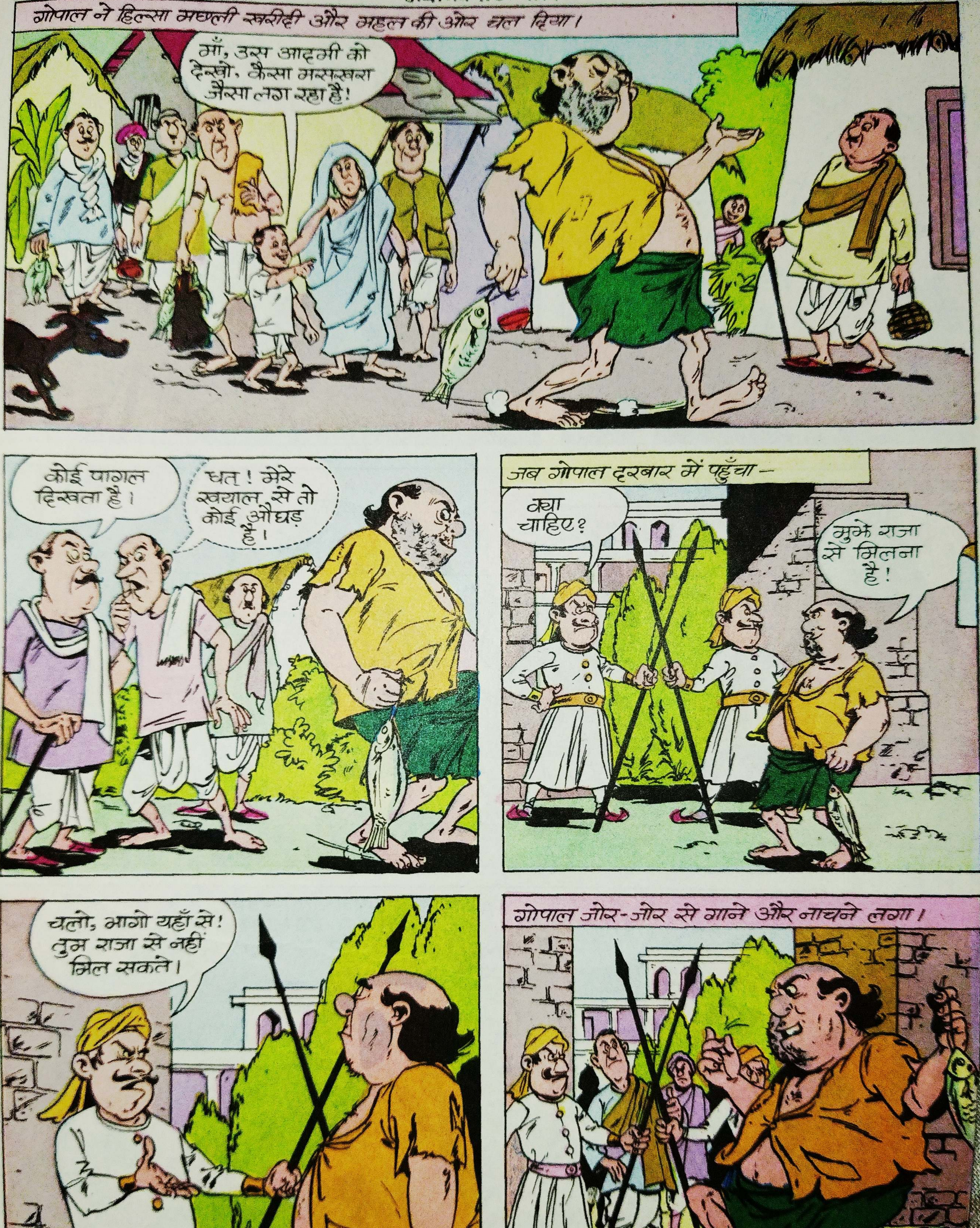

तो क्या हुआ? मैं खरीदने वाला हूँ न!
अच्छा, ऐसी बात है! ठहर तो सही।
अरे! अरे! क्या करते हो? मैंने क्या बिगाड़ा है?
तुमने नहीं, तुम्हारी गाय ने बिगाड़ा है। अपने बाग में मैं जो गोभी उगाने वाला हूँ, उसे वह खा गयी है।
उगाने वाले हो? समझ गया, समझ गया! मैं भी कैसी मूर्खतापूर्ण हरकत कर रहा था! धन्यवाद, गोपाल, बहुत-बहुत धन्यवाद!


गोपाल और हिल्सा-मछली
हिल्सा मछलियों का मौसम था। सब मछुआरे बस हिल्सा मछलियाँ पकड़ने में लगे थे।
मछली बाजार में हर जगह हिल्सा ही बिक रही थीं।
आओ, हिल्सा लो। आज दाम गिर गये हैं।
घर-परिवारों में भी हिल्सा के ही चर्चे थे।
इस हिल्सा की क्या कीमत दी?
तुम्हें बताऊँगा तो भरोसा नहीं करोगी।
यहाँ तक कि दरबार तक में हिल्सा मछली ही चर्चा का विषय बनी हुई थी।
महाराज, काश आप देखते, मैंने इतनी बड़ी हिल्सा पकड़ी थी। वह...


चुप रहो!
तुम दरबारी हो या मछुआरे?
सब दरबारी सिर झुका कर चुप हो गये। राजा को अफसोस हुआ।
मुझे दुःख है। मैं बरस पड़ा। यह तो हिल्सा मछलियों का मौसम ही है। कोई भी...
...यहाँ तक कि गोपाल भी किसी को हिल्सा की बात करने से रोक नहीं सकता। एक क्षण के लिए भी नहीं!
ऐसा! मेरा खयाल है, मैं रोक सकता हूँ, महाराज!
अच्छा, एक बड़ी-सी हिल्सा खरीदो और महल तक खुद ले कर आओ, और कोई उसके बारे में बात न करे तो हम तुम्हें मान जायें।
मुझे चुनौती स्वीकार है, महाराज!



कुछ दिन बाद –
तुमने आधी हजामत ही क्यों बनायी ?
मैं हिल्सा मछली खरीदने के लिए तैयार हो रहा हूँ।
हाय, तुम्हें हो क्या गया है ? यह राख क्यों मल रहे हो ?
मैंने बताया न – मैं हिल्सा मछली खरीदने की तैयारी कर रहा हूँ।
अरे सुनो तो! हाय! ये चिथड़े लटका कर बाहर कहाँ जा रहे हो ? कितनी शर्म की बात है! क्या कर रहे हो ?
कितनी बार बताऊँ, भली औरत! मैं एक बड़ी-सी हिल्सा मछली खरीदने जा रहा हूँ।
हाय, इनका तो दिमाग फिर गया लगता है!

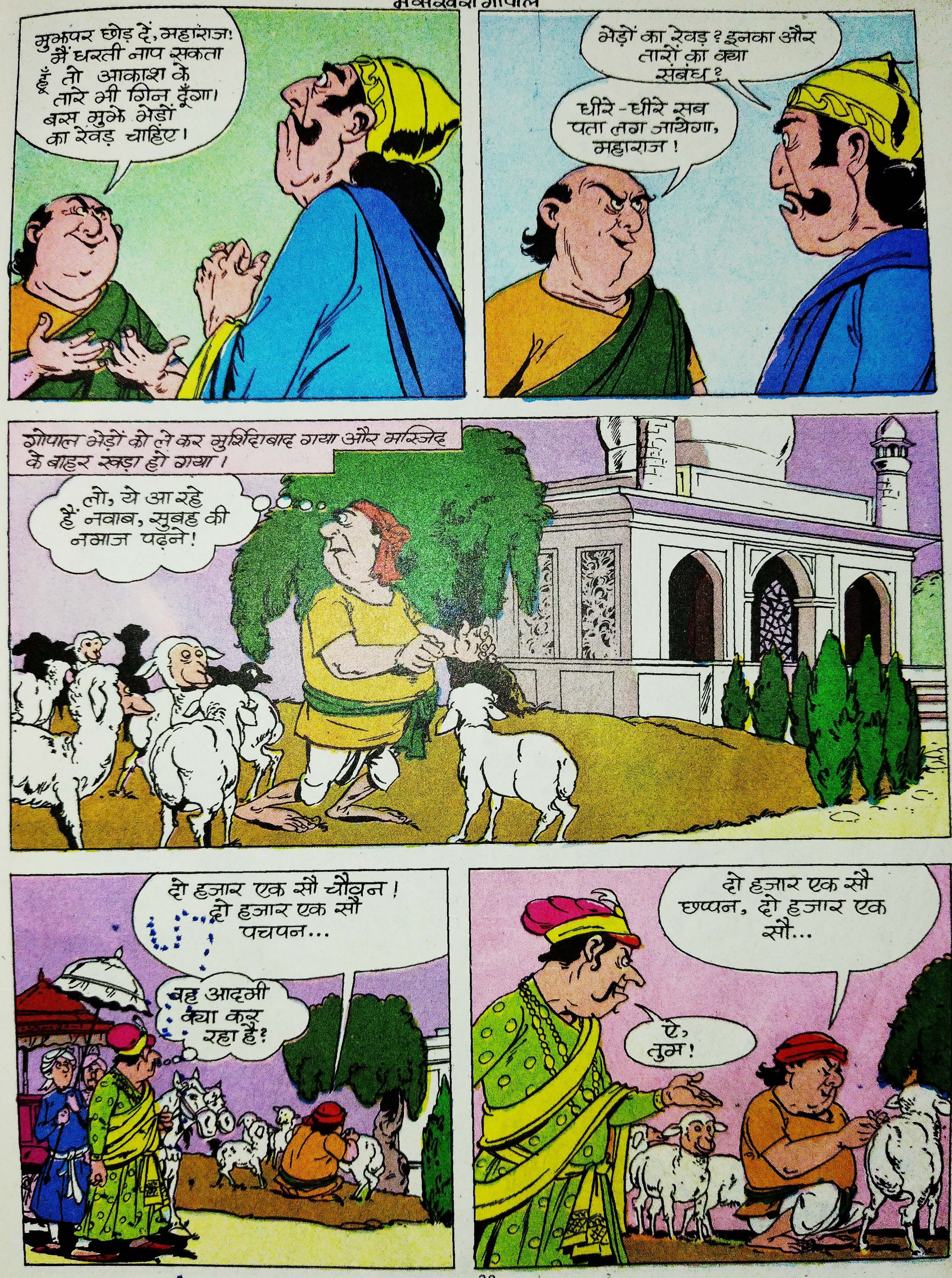

गोपाल ने हिल्सा मछली खरीदी और महल की ओर चल दिया।
माँ, उस आदमी को देखो, कैसा मसखरा जैसा लग रहा है!
कोई पागल दिखता है।
धत! मेरे खयाल से तो कोई औघड़ है।
जब गोपाल दरबार में पहुँचा –
क्या चाहिए?
मुझे राजा से मिलना है!
चलो, भागो यहाँ से! तुम राजा से नहीं मिल सकते।
गोपाल जोर-जोर से गाने और नाचने लगा।


महल में —
यह आदमी पागल है!
बाहर निकालो इसे।
मुझे राजा से मिलना है। भीतर जाने दो!
कौन है, फौरन बुलाओ उसे।
जो आज्ञा, महाराज!
गोपाल को राजा के सामने हाजिर किया गया।
यह तो गोपाल है!
बेचारे का दिमाग खराब हो गया!
मुझे तो लगता है, फिर कोई मसखरी कर रहा होगा।


ठीक है, गोपाल, नाटक छोड़ो। यह बताओ कि यह अजीबोगरीब भेस क्यों बना रखा है?
महाराज, आप कुछ भूल रहे हैं शायद!
कुछ भूल रहा हूं?
अजीब बात है, आज हिल्सा को सभी लोग भूल गये हैं! बाजार से महल तक, और दरबार में भी, किसी ने भी हिल्सा की कोई बात ही नहीं की!
तब राजा को अपनी चुनौती की बात याद आयी।
हा! हा! बधाई हो, गोपाल! एक बार फिर तुमने असंभव को संभव कर दिखाया।

गोपाल ने तारे गिने


आपने सुना ही नहीं, महाराज! वह मेरा सबसे बढ़िया लतीफा था।
मुझे अकेला छोड़ दो। इस समय लतीफा सुनने का मन नहीं है।
अब समझा। नवाब ने फिर परेशान किया होगा! इस बार क्या बात है?
ज्यादा कुछ नहीं, बस वह आकाश के तारों की गणना करवाना चाहता है। क्या सोचता है वह आखिर? मैं कोई जादूगर हूँ क्या?


मुझपर छोड़ दें, महाराज! मैं धरती नाप सकता हूँ तो आकाश के तारे भी गिन दूँगा। बस मुझे भेड़ों का रेवड़ चाहिए।
भेड़ों का रेवड़? इनका और तारों का क्या संबंध?
धीरे-धीरे सब पता लग जायेगा, महाराज!
गोपाल भेड़ों को ले कर मुर्शिदाबाद गया और मस्जिद के बाहर खड़ा हो गया।
लो, ये आ रहे हैं नवाब, सुबह की नमाज पढ़ने!
दो हजार एक सौ चौवन! दो हजार एक सौ पचपन...
वह आदमी क्या कर रहा है?
दो हजार एक सौ छप्पन, दो हजार एक सौ...
ऐ, तुम!


धत् तेरे की! फिर से गिनना पड़ेगा!
क्या फिर से गिनना पड़ेगा?
इन सबके बाल गिनने हैं, हुजूर!
पागल हो क्या? कैसी ऊलजलूल बात कर रहे हो!
हुजूर, यह तारों की गिनती करने से भी ज्यादा ऊल-जलूल बात है क्या?
तारों की गिनती? हुँऽ! वह... बिलकुल फिजूल बात है! दुनिया में और बहुत कुछ है करने को... तुम जा सकते हो। मैं महाराजा से बात कर लूँगा।
शुक्रिया, हुजूर शुक्रिया।

INDIA'S LARGEST SELLING COMICS

DIAMOND COMICS PRESENTS

Cartoonist Pran's

Evergren Characters Chacha Chaudhary, Billoo, Pinki, Raman, Shrimatiji, Soni Sampat's Entertaining Comics

CHACHA CHAUDHARY SERIES



अमर चित्र कथा

Bhagya

अब डायमण्ड कॉमिक्स में
भारत के 5000 वर्ष के गौरवशाली इतिहास, पौराणिक कथाओं व महापुरुषों की
जीवनीयों का अत्यन्त आकर्षक रुप में सचित्र प्रस्तुतीकरण
आकर्षक चार रंग का टाइटल



डायमण्ड कॉमिक्स में प्रकाशित अमर चित्र कथाएं

कृष्ण	महावीर	बीरबल I-III	सूरदास	सुदामा	भगत सिंह
शकुन्तला	गणेश	हितोपदेश I-III	रविन्द्रनाथ ठाकुर	गुरु रविदास	कर्ण
राम	विवेकानंद	जातक कथायें I-IV	चैतन्य महाप्रभु	सुभाष चन्द्र बोस	द्रौपदी
हनुमान	बन्दा बहादुर	गीता	डा. अम्बेडकर	लोकमान्य तिलक	आदिशंकराचार्य
हरिश्चन्द्र	गुरु अर्जन देव	राजा भोज	दुर्गावती	रामकृष्ण परमहंस	रंजीत सिंह
गुरु गोबिन्द सिंह	राणा प्रताप	गंगा	प्रहलाद	सूर्य	तुलसीदास
अशोक	पंचतंत्र I-IV	चन्द्रशेखर आजाद	विक्रमादित्य	साईबाबा की कहानियां	विष्णु की कहानियां
गुरु नानक	चाणक्य	तानसेन	सावित्री	शिवाजी की कथाएं	भीष्म
गुरु तेगबहादुर	पृथ्वीराज चौहान	हरिसिंह नलवा	पद्मिनी	मीराबाई	परशुराम
गुरु हरगोविंद	आम्रपाली	दुर्गा की कथाए	नल दमयंती	अर्जुन की कथाएं	शेरशाह
बुद्ध	शिव की कहानियाँ	अकबर	एकनाथ	शाहजहाँ	जहांगीर
शिवाजी	सिकन्दर और पौरुष	कालिदास	ज्ञानेश्वर	शंकर देव	छत्रसाल
झांसी की रानी	उर्वशी	जवाहर लाल नेहरू	शिव पार्वती	हर्ष	अमर सिंह राठौर
कबीर	वसंतसेना	समर्थ रामदास	अभिमन्यु	विश्वामित्र	माधवानल कामकंदला

Diamond Comics Pvt. Ltd., 257, Dariba Kalan, Delhi-110006
Visit us at : www.diamondcomic.com